E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2021; 3(4): 263-266
Received: 17-09-2021
Accepted: 21-10-2021

डॉ. देवी प्रसाद
सह आचार्य, हिन्दी विभाग, सेठ नन्द किशोर पटवारी राजकीय महाविद्यालय नीमकाथाना, सीकर, राजस्थान, भारत

श्री संजय कुमार
सहायक आचार्य, रसायन शास्त्र विभाग, एस.एन.के.पी.राजकीय महाविद्यालय नीमकाथाना, सीकर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. देवी प्रसाद
सह आचार्य, हिन्दी विभाग, सेठ नन्द किशोर पटवारी राजकीय महाविद्यालय नीमकाथाना, सीकर, राजस्थान, भारत

साहित्य और समाज पर टेक्नोलॉजी का प्रभाव

डॉ. देवी प्रसाद, श्री संजय कुमार

DOI: https://doi.org/10.33545/27068919.2021.v3.i4c.1006

सारांश
कोई भी देश या समाज कितना विकसित होगा, यह सीधा–सीधा टेक्नोलॉजी पर निर्भर करता है। टेक्नोलॉजी मानव–मस्तिष्क की उपज है। मानव–सभ्यता के विकास के साथ–साथ टेक्नोलॉजी का निरन्तर विकास हुआ है। मानव जीवन और टेक्नोलॉजी एक–दूसरे के पूरक हैं। समाज का विकास टेक्नोलॉजी पर निर्भर है। हम टेक्नोलॉजी का उपयोग दैनिक जीवन में अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने में करते हैं जैसे– आवागमन, संचार, चिकित्सा, शोध, ज्ञानार्जन, कारोबार में तथा जीवन को आसान बनाने में। आधुनिक समय में टेक्नोलॉजी के बिना जीवन की कल्पना करना भी आसान नहीं है। मानव समाज के लिए पहिया बेहद महत्वपूर्ण आविष्कार था। इसके सबूत 3500 ईसा पूर्व के हैं, जो प्राचीन मेसोपोटामिया सभ्यता में देखे गये थे। आज पूरा विश्व पहिए पर घूम रहा है। इसी कड़ी में 1844 में चार्ल्स गुडईयर ने वल्कनीकृत रबड़ का आविष्कार किया, जिसने टायर उद्योग की दशा बदल दी। कम्प्यूटर और इन्टरनेट आने के बाद मानव जीवन में अचानक बदलाव आ गया है। इनकी वजह से काम आसानी से होने लग गये हैं। आधुनिक काल में कम्प्यूटर की पाँचवी पीढी काम में आ रही है, जिसमें आर्टीफिसियल इंटेलिजेंस तकनीक का इस्तेमाल हो रहा है। मिस्र के पिरामिड से लेकर दुबई की बुर्ज खलीफा तक लगातार टेक्नोलॉजी का विकास हुआ है। साहित्य और समाज पर टेक्नोलॉजी का गहरा प्रभाव है, जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता।

कुटशब्दः आर्टीफिसियल इंटेलिजेंस, टेक्नोलॉजी, चिकित्सा, शोध, डिजिटल लाइब्रेरी, डिजिटल प्लेटफॉर्म, ई–बुक्स, ऑडियो बुक्स, वर्चुअल क्लासरूम, इकोफ्रेंडली।

प्रस्तावना
टेक्नालॉजी का साहित्य और समाज पर प्रभाव जान लेने से पहले टेक्नोलॉजी का अर्थ समझना आवश्यक है। विभिन्न शब्दकोशों में टेक्नोलॉजी को परिभाषित किया गया है। "Technology is the application of knowledge for achieving practical goals in a reproducible way.''[1] इसी प्रकार ''Technology, the application of scientific knowledge to the practical aims of human life or, as it is sometimes phrased, to the change and manipulation of the human environment.''[2]
आधुनिक युग में प्रौद्योगिकी और मानव–जीवन को एक–दूसरे से पृथक नहीं किया जा सकता, या कहें कि दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। आज जीवन का ऐसा कोई भी पक्ष नहीं है, जहाँ प्रौद्योगिकी का उपयोग न होता हो। मानवीय ज्ञान से ही प्रौद्योगिकी का उद्भव और विकास संभव हुआ है, लेकिन अब यही प्रौद्योगिकी ज्ञान पर हावी होती जा रही है। प्रौद्योगिकी के विकास के आगे ज्ञान की सीमा रेखाएं नजर आने लगी हैं, जबकि यह एक यथार्थ है कि बिना ज्ञान के प्रौद्योगिकी का विकास संभव नहीं है, इसलिए यह मान लेना कि प्रौद्योगिकी के द्वारा मानव मस्तिष्क को नियंत्रित किया जा सकता है, एक भ्रम से ज्यादा कुछ नहीं है।

साहित्य पर टेक्नोलॉजी का प्रभाव
तकनीक से साहित्य के क्षेत्र में नयी क्रांति की शुरुआत हुई है। अब प्रिंट मीडिया के बजाय ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का अधिक विस्तार हो रहा है। तकनीक ने सूचना तक पहुँचने, बनाने और साझा करने का प्रभाव साहित्य की लगभग हर विधा पर इसका प्रभाव पड़ा है। डिजिटल प्रौद्योगिकी के उदय ने लेखकों, प्रकाशकों और पाठकों के लिए एक–दूसरे के साथ बातचीत करने के नए अवसर पैदा किए हैं। टेक्नोलॉजी से साहित्य के परिवेश में भी परिवर्तन आ गया है। उसका प्रभाव साहित्य की शैली पर भी पड़ा है और डिजिटल युग हिंदी साहित्य में एक ऐसा काल है।
कुछ वर्षों पहले पुस्तक पढ़ने के लिए या तो पुस्तक खरीदनी होती थी या फिर पुस्तकालय जाना होता था। आज अनेक पुस्तकों को ऑनलाइन पढ़ा जा सकता है। यद्यपि सभी पुस्तकें ऑनलाइन पढ़ना संभव नहीं है और न ही सब पुस्तकें ऑनलाइन है फिर भी तकनीक ने इसे आसान बना दिया है। ऐसे व्यक्ति जो देख नहीं सकते उनके लिए भी ऑडियो बुक आ गई हैं, जो उनके लिए वरदान साबित हो रही हैं। यह सब टेक्नोलॉजी का प्रभाव है।

आज टेक्नोलॉजी के कारण साहित्यकार अपनी रचना को अधिक पाठकों तक पहुंचा रहे हैं। डिजिटल प्रौद्योगिकी के चलते लेखन, प्रकाशन पूरी तरह से बदल गया है। स्मार्टफोन, कंप्यूटर और इंटरनेट जैसे डिजिटल उपकरणों और प्रौद्योगिकियों के व्यापक उपयोग ने साहित्य को बहुत अधिक प्रभावित किया है। डिजिटल लाइब्रेरी (ई–पुस्तकालय)[3] के माध्यम से पाठक बहुत सी पुस्तकें घर बैठे पढ़ सकता है। टेक्नोलॉजी ने साहित्य अध्ययन को आसान बना दिया है। शोधार्थियों के लिए 'शोधगंगा'[4] नामक डिजिटल प्लेटफॉर्म है, जहाँ से शोधार्थी शोध संबंधी सामग्री का अवलोकन, डाउनलोड करके लाभान्वित हो सकते हैं। तकनीक युग का संस्कृति, कला और साहित्य सहित आधुनिक समाज के वस्तुतः हर क्षेत्र पर गहरा प्रभाव पड़ा है। फेसबुक[4], यूट्यूब[5] आदि के माध्यम से घर बैठे साहित्य से रूबरू हो सकता है। इन माध्यमों से साहित्य के अध्ययन–अध्यापन में बहुत मदद मिलती है। ई–बुक्स[6], ऑडियो बुक्स और ऑनलाइन पत्रिकाओं ने हिंदी साहित्य को वैश्विक दर्शकों तक पहुंचाना संभव बना दिया है।

आज साहित्य केवल कागज और कलम तक सीमित न होकर वह एक डिजिटलीकृत रूप में परिवर्तित हुआ है। आधुनिक युग में पौराणिक, ऐतिहासिक एवं साहित्यिक रचनाएँ, लेख–आलेख अपनी अपनी मोबाइल, लैपटाप और आईपेड आदि के माध्यम से पढ़े और लिखें जा सकते हैं। यह सब परिवर्तन प्रौद्योगिकी की देन है। बाजार में ऐसे अनेक सॉफ्टवेरर्स और एप्लिकेशन हैं कि जिनसे कहीं भी और कभी भी राजनीतिक, सामाजिक, व्यावहारिक एवं साहित्यिक खबरें पढ़ी जा सकती हैं। इसी के साथ साहित्य को जनसामान्य तक पहुँचाने का कार्य अनेक वेबसाईट्स कर रही हैं, जिनकी सूची बहुत लम्बी है। प्रौद्योगिकी के साधनों और उपकरणों के वजह से साहित्य और प्रौद्योगिकी का संबंध गहरा होता चला जा रहा है।

समाज पर टेक्नोलॉजी का प्रभाव

टेक्नोलॉजी पर्यावरण, के साथ ही सम्पूर्ण मानव समाज पर सीधा प्रभाव डालती है। यह चर्चा का विषय मना हुआ है कि टेक्नोलॉजी मानव के लिए फायदेमंद है या नुकसानदायक। देखा जाए तो टेक्नोलॉजी अपने आप में समाज के लिए नुकसानदायक नहीं बल्कि इसका इस्तेमाल किस तरह किया जाता है, यह तय करता है कि यह समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालेगी या नकारात्मक। जैसे यूरेनियम का उपयोग नाभिकीय ऊर्जा संयंत्र में ईंधन के रूप में बिजली बनाने में हो रहा है तथा इसी का उपयोग परमाणु बम में भी हो रहा है, जो मानव समाज के लिए सबसे बड़ा खतरा है। जो द्वितीय विश्व युद्ध में हिरोशिमा व नागासाकी के विनाश का कारण बना था। इसी के साथ विभिन्न क्षेत्रों में टेक्नोलॉजी का नकारात्मक इस्तेमाल किया जा रहा है, जो मानव–जीवन के लिए बहुत बड़ा खतरा है।

टेक्नोलॉजी का सकारात्मक प्रभाव

टेक्नोलॉजी की वजह से ही समाज आज इस मुकाम पर है। आज मानव की पहुँच चाँद व मंगल ग्रह तक हो गयी है तथा वह मंगल ग्रह पर बसने की सोच रहा है। यह सब टेक्नोलॉजी का ही कमाल है। मोबाइल ने लोगों की जिंदगी बदल दी। ऐसा लगता है कि सारा संसार मुट्ठी में समा गया है। अमेंजन, फ्लिपकार्ट आदि कंपनियों ने आम आदमी की पहुँच विश्व स्तर तक बना दी है। ऑनलाइन बैंकिंग ने जीवन को और भी आसान बना दिया है। आज मानव के सारे काम आसानी से हो रहे हैं। यह सब टेक्नोलॉजी का सकारात्मक प्रभाव ही है। इस विषय को निम्न प्रकार से समझ सकते हैं:–

1 कृषि–क्षेत्र में

पुरातन समय में खेती से सम्बंधित कार्य पशुओं की सहायता से होता था, जिसमें समय और श्रम बहुत अधिक लगता था और पैदावार बहुत कम होती थी। मानव का अधिकांश समय खेती कार्य में खर्च हो जाता था। लेकिन आज के समय मे कृषि क्षेत्र में आधुनिक कृषि संयंत्रों का उपयोग हो रहा है, जिससे कम समय, कम लागत और कम श्रम में ज्यादा पैदावार हो रही है। फव्वारां सिस्टम, बूंद–बूंद खेती के उपयोग से पानी की बचत हो रही है। ग्रीन हाउस व कार्बनिक खेती के चलन की वजह से किसान की आय में इजाफा हुआ है। भंडार गृहों की अवधारण से कृषि उत्पादों को काफी समय के लिये सुरक्षित रखा जा सकता है, जिससे किसान को सही समय पर सही दाम मिल सकते हैं। कृषि क्षेत्र में मौसम आधारित उपग्रहों का इस्तेमाल हो रहा है, जो प्राकृतिक आपदा, मौसम आदि की सटीक जानकारी प्रदान करते हैं।

2 शिक्षा के क्षेत्र में

कम्प्यूटर के आने के बाद शिक्षा के क्षेत्र मे क्रांति आ गयी। कम्प्यूटर में बहुत सारा डाटा स्टोर किया जा सकता है, जिससे कागज की बचत हो रही है। इसकी सहायता से ऑनलाइन पढाई की जा सकती है। इंटरनेट की सहायता से दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने में सूचनायें तुरंत पहुंच जाती हैं। इंटरनेट पर शिक्षा से सम्बंधित सामग्री आसानी से उपलब्ध हो जाती है। ऑनलाइन टीचींग प्रोग्राम की वजह से विद्यार्थियों को काफी फायदा हो रहा है। ऐसा लगता है कि पूरी दूनिया कम्प्यूटर में समा गयी है। टेक्नोलॉजी की वजह से ही ''सबको शिक्षा, सबका विकास'' वाला नारा चरितार्थ हो रहा है। शैक्षिक प्रौद्योगिकी (Educational technology) में कंप्यूटर हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर जैसी टेक्नोलॉजीज का इस्तेमाल शिक्षा के लिए किया जाता है। वर्चुअल क्लासरूम Educational technology का एक उत्तम उदाहरण है। टेक्नोलॉजी का एजुकेशन में इस्तेमाल करने के कई फायदे होते हैं, जैसे– विद्यार्थी स्वयं अपनी पढाई इंटरनेट से कर सकते है और कंप्यूटर में ग्राफिकल रिप्रेजेंट से कोई भी जटिल कॉन्सेप्ट आसानी से समझ आती है।

3 परिवहन के क्षेत्र में

ब्हुत समय पहले की बात नहीं है जब आवागमन के लिये मानव पशुधन पर ही निर्भर था। इस कारण थोड़ी सी दूरी तय करने में भी पूरा दिन लग जाता था। लेकिन आज के समय में हाइपर लूप, ट्रेन, बुलेट ट्रेन, हवाई जहाज, बस, कार आदि की वजह से आवागमन आसान हो गया है, यह सब टेक्नोलॉजी का कमाल है। इस समय आर्टीफिशियल इन्टेलिजेन्स तकनीक का इस्तेमाल ड्राइवर लेस वाहनों में हो रहा है। कारों मे जी. पी. एस. तकनीक का इस्तेमाल हो रहा है, जिससे रास्ता ढूंढने में आसानी रहती है। वर्तमान में परिवहन के सभी साधनों में टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल हो रहा है।

4 चिकित्सा–क्षेत्र में

पुरातन समय में मानव प्रत्येक बीमारी के लिये झाड़–फूंक, दैवीय शक्तियों और जड़ी बूंटीयों पर निर्भर था। सही इलाज नहीं मिलने के कारण अकारण ही मृत्यु हो जाती थी। इस कारण शिशु मृत्यु दर काफी अधिक और जीवन प्रत्याशा कम थी। आज के समय में उन्नत उपकरणों का इस्तेमाल चिकित्सा क्षेत्र मे हो रहा है। (MRI, CT-SCAN, ECG, 2D-ECCO, LAPROSCOPY, X-RAY etc.) आज के समय में शरीर से संबंधित सभी प्रकार की

जाँचे आसानी से बहुत कम समय में हो जाती है, जिससे सही समय पर सही इलाज मिल जाता है। आज लगभग सभी प्रकार की बीमारियों का इलाज चिकित्सा क्षेत्र मे संभव है। यह सब टेक्नोलॉजी का कमाल है।

5 सोशल मीडीया पर

सोशल, प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडीया टेक्नोलॉजी की ही देन है, जिसकी वजह से सटीक खबरें लोगों तक आसानी से पहुँच जाती हैं। आज के दौर में सोशल मीडिया जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन चुका है, जो बाकी सारे मीडीया (प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और समानांतर मीडिया) से अलग है। सोशल मीडीया इंटरनेट के माध्यम से एक वर्चुअल वर्ल्ड बनाता है, जिसे उपयोग करने वाला व्यक्ति सोशल मीडीया के किसी प्लेटफॉर्म (फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम) आदि का उपयोग कर पहुँच बना सकता है। सोशल मीडीया समाज में सकारात्मक भूमिका अदा करता है, जिससे किसी भी व्यक्ति, संस्था, समूह और देश आदि को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से उन्नत बनाया जा सकता है। ऐसे कई उदाहरण हैं, जो उपरोक्त बातों को पुष्ट करतें हैं, जिनमें भ्रष्टाचार से जुड़ा हुआ अन्ना हजारे (India Against Corruption) आन्दोलन जिसकी सफलता में सोशल मीडीया का अहम् रोल था। 2014 के आम चुनाव में सोशल मीडीया का उपयोग आमजन को जागरूक करने में किया गया। सोशल मीडीया के माध्यम से ही 'निर्भया' को न्याय दिलाने के लिए विशाल संख्या में युवा सड़कों पर आ गए थे। इस कारण सरकार दबाव में आकर एक नया एवं प्रभावशाली कानून बनाने पर मजबूर हो गई थी। यह बहुत तेज गति से होने वाला संचार का माध्यम है। इसके द्वारा फोटो, वीडीयो, सूचना, डॉक्यूमेंट्स आदि को आसानी से शेयर किया जा सकता है। पिछले कुछ समय पहले सोशल मीडीया पर ME TOO CAMPAIGN चल रहा था, जिसके माध्यम से दुनियाभर की महिलायें अपने साथ घटी यौन उत्पीड़न संबंधित घटनाओं को साझा किया। कुछ उदाहरण जैसे सुप्रीम कोर्ट द्वारा SC-ST ऐक्ट 1989 के संदर्भ में आये एक फेसले के विरोध में दलित संगठनो के द्वारा 2 अप्रेल 2018 को भारत बंद का ऐलान सोशल मीडिया के द्वारा किया गया।

6 अपराध–क्षेत्र में

पहले अपराधी अपराध करके कानून के शिकजें से आसानी से बच जाते थे, लेकिन वर्तमान समय में पुलिस उन्नत किस्म की तकनीक का इस्तेमाल करके अपराधियों को आसानी से पकड़ लेती है, जिससे अपराध पर अंकुश लग रहा है। मोबाइल लोकेशन व कॉल डिटेल के आधार पर अपराधी आसनी से पकड़ में आ रहे हैं। फिंगर प्रिंट तकनीक के इस्तेमाल से अपराधीयों की आसानी से पहचान हो रही है। इसी के साथ CCTV केमरे आपराधिक वारदातों को सुलझानें में कारगर साबित हो रहें है। ये कह सकते हैं कि अपराधियों में भगवान का डर हो या ना हो लेकिन टेक्नोलॉजी का जरूर है।

एफिल टावर, स्टेच्यु ऑफ लिबर्टी, स्टेच्यु ऑफ युनीटी (गुजरात), बोगीवील डबल डेकर पुल (असम), सिग्नेचर ब्रिज (दिल्ली), स्पेस स्टेशन, जवाहर टनल (कश्मीर), सुपरसोनिक विमान, समुद्र में स्थित आयल बेस आदि टेक्नोलॉजी के बेजोड़ नमुने हैं। इंगलेड में ऑफिस, शॉपिंग मॉल व हीथ्रो एयरपोर्ट पर पेवेगान कंपनी द्वारा निर्मित टाइलों का उपयोग लाइट जलाने में हो रहा है। ये टाइल पिज्जो इलेक्ट्रिक प्रभाव पर कार्य करती है, इन टाइलों पर चलने मात्र से बिजली बनती है। आज के समय युद्ध क्षेत्र, अंतरिक्ष क्षेत्र, शोध क्षेत्र, संचार क्षेत्र, नाभिकीय एनर्जी क्षेत्र आदि में उन्नत तकनीक का इस्तेमाल हो रहा है जिसका सीधा–सीधा फायदा समाज को हो रहा है।

टेक्नोलॉजी का नकारात्मक प्रभाव

हर चीज के दो पहलू होते हैं– सकारात्मकता और नकारात्मकता। इसी प्रकार टेक्नोलॉजी मानव समाज के लिए वरदान है तो अभिशाप भी है। टेक्नोलॉजी का गलत इस्तेमाल सम्पूर्ण मानव जीवन पर बुरा असर डालता है। आज के समय मानव के लिये सबसे बड़ा चैलेंज यह है कि उसे किस प्रकार का भविष्य चाहिए। उसी के अनुसार टेक्नोलॉजी का विकास करें, जो चीजों को आसान कर दे। टेक्नोलॉजी समाज पर निम्न प्रकार से नकारात्मक प्रभाव डालती हैः–

1 मानवीय संवेदनाओं का क्षरण

आज के समय में इंसान तकनीक पर इतना निर्भर हो चुका है कि उसके बिना एक पल भी नहीं रह पाता। टेक्नोलॉजी के लगातार इस्तेमाल से इंसान का मशीनीकरण हो गया है। मानवीय संवेदनाएं खत्म हो रही है। आज लोग पीड़ित या दुर्घटनाग्रस्त की सहायता करने की बजाय किसी घटना का वीडीयो बनाते रहते हैं, चाहे आगजनी हो, चाहे रोड़ ऐक्सीडेन्ट, चाहे छेड़छाड़ की घटना। लोगों में सबसे पहले वीडीयो शेयर करने की होड़ सी लगी रहती है। युवा शेल्फी लेने के चक्कर में अपनी जान जोखिम में डाल रहें हैं। इसके कारण अनेक लोगों को जान गवांनी पड़ी है। तकनीक के चक्कर में प्रत्येक इंसान एक वर्चुवल दुनिया में जी रहा है, जहाँ वह मानवीय रिश्तो–नातों और प्रकृति से लगातार दूर हो रहा है।

2 दूषित होता पर्यावरण

टेक्नोलॉजी को विकसित करने के लिए आवश्यक संसाधन प्रकृति से ही प्राप्त होते हैं। आज विकास की अंधी दौड़ में लगातार प्राकृतिक संसाधनों का लगातार दोहन हो रहा है। इस कारण धरती खोखली होती जा रही है व इसकी ऊपरी परत का लगातार अपरदन हो रहा है। प्राकृतिक संसाधन लगातार घट रहे हैं। जंगल लगातार घट रहे हैं व पत्थर के जंगल खड़े हो रहे हैं। आवागमन के साधन व कल कारखाने लगातार वातावरण में धुँआ छोड़ रहे हैं, जिससे वातावरण दूषित हो रहा है। वायु, जल व ध्वनिप्रदुषण लगातार बढ रहा है। इसी के साथ मोबाइल टावरों से निकलने वाली तरंगों का भी मानव व जीव–जन्तुओं पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। प्रदूषण के कारण कई प्रकार की बीमारियां (कैंसर, क्षय, दमा, बहरापन, त्वचा कैंसर आदि) देखने को मिल रही है। प्राकृतिक आपदाओं का लगातार खतरा बढ़ रहा है। (सूनामी, ग्रीन हाउस इफेक्ट, भूकम्प आदि)

3 स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव

मनुष्य की टेक्नोलॉजी पर निर्भरता लगातार बढ़ रही है। इस कारण मनुष्य की शारीरिक क्षमता लगातार घट रही है। कम्प्यूटर व मोबाइल के लगातार इस्तेमाल से कमर दर्द, तनाव, कैन्सर व आँखों की बीमारियां देखने को मिल रही है। छोटे बच्चों पर इसका ज्यादा प्रभाव पड़ रहा है इस कारण इनका बौद्धिक विकास तो हो रहा है, लेकिन शारीरिक विकास नहीं हो रहा है।

4 समाजिक तानेबाने पर दुष्प्रभाव

समाज पर टेक्नोलॉजी का प्रभाव बढने के साथ–साथ रोजगार घट रहे हैं। इस कारण अधिकतर युवा अपना ज्यादातर समय इंटरनेट पर गुजार रहे हैं। ये लोग सोशल मीडीया पर चलने वाले भ्रामक सूचनाओं से भ्रमित हो रहे हैं। इस भीड़ को नेता अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं। इस भीड़ तंत्र का शिकार पुलिस, किसान, सेना, आम जनता हो रही है। कश्मीर घाटी में सोशल मीडीया की वजह से आतंकवाद ज्यादा उग्र हो गया है। युवा पत्थरबाजों की भीड़ कश्मीर में सुरक्षाबलों के लिए आज बहुत बड़ी मुसीबत बन गयी है। सोशल

मीडीया पर भ्रामक वीडीयो चलते रहते हैं इनकी सत्यता जाँच किये बिना ही लोग आगे शेयर करते रहते हैं, जिससे सामाजिक सौहार्द्र बिगड़ रहा है।

5 साइबर अपराध

इंटरनेट के चलन में आने के साथ ही साइबर अपराध की घटनायें लगातार बढ रही हैं। साइबर एक्सपर्ट इंटरनेट के द्वारा ऑनलाइन चोरी, साइट हैकिंग व डाटा चोरी की घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं। अभी हाल ही में विकीलीक्स द्वारा कई देशों (अमेरिका, आस्ट्रेलिया, फ्रांस आदि) की गुप्त सूचनायें चुराई गयी जिससे पूरे विश्व में भूचाल आ गया था। अभी हाल ही में संम्पन्न हुए अमेरिका के चुनावों में रूस पर ऑनलाइन गड़बड़ी का आरोप लगा था। आतंकवादियों को पैसे की फंडिग ऑनलाइन हो रही है जिससे आतंकवाद लगातार बढ रहा है। सरकारें जनता की व्यक्तिगत सूचनओं की ऑनलाइन चैकिंग कर रही है जिससे आज कोई भी व्यक्तिगत जानकारी गुप्त नहीं रही। आज देशों के मध्य अक्सर साइबर वार देखने को मिल रहा है।

निष्कर्ष

टेक्नोलॉजी समाज की ही देन है। समाज के सतत विकास के लिये उन्नत टेक्नोलॉजी जरूरी है और इसका लगातार विकास होते रहना चाहिए। भविष्य की आवश्यकताओं को देखते हुए मानव टेक्नोलॉजी को विकसित करे। आज आवश्यकता है कि मानव इकोफ्रेंडली तकनीक विकसित करें, जिससे पर्यावरण सुरक्षित रहें और समाज को फायदा हो। आज पर्यावरण प्रदूषण से बचने के लिये साइकिल, इलेक्ट्रिक वाहनों व पब्लिक ट्रांसपोर्ट को बढावा देने की आवश्यकता है। हाइड्रोकार्बन ईंधन (पैट्रोल, डीजल आदि) की जगह प्राकृतिक गैस, हाइड्रोजन गैस, सौर एनर्जी व विन्ड एनर्जी को बढावा देने की आवश्यकता है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि टेक्नोलॉजी अपने आप में गलत नहीं है, बशर्ते इसका इस्तेमाल सही हो।

सन्दर्भ

1. Skolnikoff, Eugene B. The Elusive Transformation: Science, Technology, and the Evolution of International Politics. Princeton University Press; c1993. p. 13.
2. https://www.britannica.com
3. https://epustakalay.com
4. https://www.facebook.com
5. https://www.youtube.com
6. https://www.hindwi.org/ebooks